जैनोपयोगी अति उत्तम ग्रंथो.

प्रकरण रत्नाकर भाग १ लो	६-४-०
प्रकरण रत्नाकर भाग ४ थो	८-८-०
जैनकथारत्नकोष भाग १ लो	३-०-०
जैनकथारत्नकोष भाग २ जो	२-१२-०
जैनकथारत्नकोष भाग ४ थो	३-४-०
जैनकथारत्नकोष भाग ६ ठो	१-८-०
जैनकथारत्नकोष भाग ७ मो	३-८-०
जैनकथारत्नकोष भाग ८ मो	३-४-०
जैनतत्त्वादर्श हिंदी भाषांतर	५-०-०
जैनतत्त्वादर्श गुजराती भाषांतर	४-०-०
पां[illegible]चरित्र रंगीन चित्र सहित	६-०-०
वैराग्यकल्पलता भाषांतर	३-८-०
अज्ञानतिमिरभास्कर	३-०-०
सुक्तमुक्तावली अनेक कथाओ युक्त	३-०-०
हरिभद्रसूरिकृत बत्रीश अष्टक	२-०-०
जैनकुमारसंभव महाकाव्य	२-०-०
शत्रुंजयमाहात्म्य भाषांतर	२-८-०
अध्यात्मसार प्रश्नोत्तर ग्रंथ	२-८-०
जंबूस्वामी चरित्र कथाओ युक्त	०-१२-०
अढीद्वीपना नकशानी हकीकत	२-८-०
चंद राजानो रास अर्थ तथा चित्र साथे	५-०-०
समरादित्य केवलीनो रास	४-०-०
[illegible] राजानो रास	३-०-०

प्रस्तावना.

आ जगतमां समस्त प्राणीमात्रने त्राणभूत, भूत, आ भव तथा परभवमां हितकारी, सुख कल्याणकारी ने मंगलकारी एवां त्रण तत्त्व नाम कहे छे. एक तो देव श्रीअरिहंतजी गुरु सुसाधु तथा त्रीजो धर्म ते श्रीकेवलिभाषित. ए त्रण तत्त्व छे, तेने आराधवानुं मुख्य कारण अनाशातना छे, अने एने विराधवानुं मुख्य कारण आशातना छे. ते आशातना पण विशेषे करी अशुचिपणा थकी थाय छे. ते अशुचि वली बे प्रकारनी छे. एक तो द्रव्य थकी अशुचि अने बीजी भाव थकी अशुचि जाणवी.

तेमां भाव अशुचि कार्यरूप छे, अने द्रव्य अशुचि तेना कारणरूप छे. कारणथी कार्य थाय छे, ए वात सर्वे शास्त्रोमां प्रसिद्ध छे, तो अहीं भाव अशुचि जे छे ते अशुद्ध लेश्या तथा अशुद्ध मनादिकना योग अने कषायादिकनी छे, केमके ए अशुद्ध लेश्यादिकनां जे पुद्गलो छे ते केवां छे? तो के श्वान, सर्प, अश्वादिक मरण पामेलां जे पशुओ तेमनां

सडी गयेलां कलेवरमां जे दुर्गंध होय छे ते करतां पण अनंतगणी दुर्गंध ए अशुद्ध लेश्यादिकनां पुद्गलोमां कहेल छे; ए वात श्रीउत्तराध्ययन तथा नगवती प्रमुख सूत्रोमां प्रसिद्ध छे.

हवे अशुद्ध लेश्यादिक थकी व्याशी पापप्रकृति बंधाय छे, ते पण अशुचिज जाणवी; कारण के अशुचिरूप कारणथी कार्य पण अशुचि थाय छे,एटले अशुचिरूप कर्म बंधाय छे, अने ते थकी नरकादिकनी गति जीवने प्राप्त थाय छे. एम कारणे कार्य थाय छे.

हवे ए पूर्वोक्त जे नाव अशुचि छे तेनी मूलोत्पत्ति द्रव्य अशुचि थकी थाय छे; कारण के द्रव्य ते नावनुं कारण छे, माटे प्रथम द्रव्य थकी अशुचि टालवा विषे प्राणीमात्रने यत्न करवानी घणीज जरुर छे. ते द्रव्य अशुचिना अनेक प्रकार छे. तेनो अधिकार श्रीगणांग प्रमुख सूत्रोने विषे ज्यां असज्जायनो विवरो कर्यो छे त्यांथी जाणी लेवो.

हवे ते समस्त असज्जायमां मोटी असज्जाय तथा समस्त अशुचिमां मोटी अशुचि अने समस्त आशातनाउमां शिरोमणीनूत आशातना तेमज सर्व पापबंधननां कारणोमां महत् पाप उपार्जन करवानुं

मुख्य कारण तो स्त्रीउने जे ऋतु प्राप्त थाय छे, अर्थात् जे पुष्पवती कहेवाय छे, एटले स्त्रीउने अटकाव अथवा कोरे वेसवानुं थाय छे अने जेने लोकोक्तिए ऋतुधर्म कहे छे, ते ऋतुधर्म यथार्थपणे न पालवा विषेनुं छे.

ते विषेनो सर्व जनोने वोध थवा सारु संक्षेपमात्र शास्त्रोमांथी सार लइने पुष्पवती स्त्रीए केवी रीते वर्तवुं ते संवंधीना अधिकारनी वे सज्झायो जे पूर्वे लोकोपकारने अर्थे कोइ महापुरुषोए वनावेली छे ते तथा एज विषय संवंधी सिद्धांतोक्त छ गाथाउ तथा असज्झाइना अटकाव संवंधीनी सज्झाय, ए रीते वधा मलीने चार ग्रंथोनो समावेश करीने आ पुस्तक अमोए छपाव्युं छे, तो आ ग्रंथमां करेला उपदेश प्रमाणे जे पुष्पवती स्त्रीउ पोते प्रवर्तशे, वीजाने प्रवर्तावशे तथा प्रवर्तनारने सहाय आपशे तेने अत्यंत लाभ थशे, अने तेने परंपराए मोक्षसुखनी प्राप्ति पण अवश्य थशे.

जे प्राणी आ ग्रंथमां करेला उपदेशथी विपरीत प्रवृत्ति करशे, अथवा ए वातमां शंका कांक्षा करशे ते प्राणीनी लक्ष्मी तथा वुद्धिनो आ भवमां नाश

शे, अने सम्यक्त्व तो तेमां होयज क्यांथी ? अर्थात् नज होय. तेना घरना अधिष्ठायिक देवो तेने मूकी जशे, अने ते जीव मिथ्यादृष्टि, अनंत संसारी, दुराचारी तथा कदाग्रही जाणवो, केमके एम कह्या थकी देव, गुरु तथा धर्मनी मोटी आशातना थाय छे, ते वात आ ग्रंथ वांचवा थकी विवेकी जनोना ध्यानमां तरत आवशे.

वली हालमां विषम कालने विषे धूम्रकेतु ग्रहना प्रभाव थकी अत्यंत जम बुद्धिने धारण करनारा जिनप्रतिमाना द्वेषी छे. वली आवी रीते प्रतिकूलपणे प्रवृत्ति करनारा लोको एम कहे छे के गुंबडा फूट्यानी माफक अथवा अन्य कोइ शरीरमां विकार थाय तेनी पेरे रुतुवंती स्त्रीने अरुकवाथी कांइ पण अशुचिपणुं प्राप्त थतुं नथी, कारण के शरीरनी मांहेली कोरे पण अशुचि भरेलीज छे, एवुं तेउनुं बोलवुं अयोग्य छे, कारण के गुंबडां विगेरे जे फूटे छे तेने पण असज्झाइ श्रीठाणांग प्रमुख सूत्रने विषे कहेलीज छे, अने शरीरनी अभ्यंतर जे अशुचि कहेवाय छे ते तो शरीर उपरथी मोहनो परित्याग करवाने अर्थे भावनारूप

छे, पण ए रक्तादिक जे छे ते शरीरथी बहार नीकल्या विना एने अशुचि कहेवायज नहीं एवो नियम छे, कारण के श्रीपन्नवणाजी उपांगमां शरीर थकी बाहिर अशुचि नीकल्या पछी तेमां चौद प्रकारना अशुचिस्थानीया जीवो उत्पन्न थाय छे, परंतु ते जीवो शरीरमां अशुचि रह्या थकी उत्पन्न थताज नथी. ए उपरथी स्पष्ट देखाय छे के शरीरनी अंदरनी अशुचि कहेवायज नहीं.

ऋतुवंती स्त्रीना रुधिरनी जे अशुचि छे ते अत्यंत ज्रष्टताना विकारने धारण करनारी छे, कारण के शरीर संबंधी लघुनीति, वडीनीति, थुंक, श्लेष्म, रुधिर विगेरे जे अशुचिओ छे तेमां पण परस्पर घणो तफावत छे. तेम ऋतुवाली स्त्रीनी अशुचि छे ते बीजी अशुचि करतां अत्यंत विशेष अशुचिमय छे. जेम सर्पादिक झेरी जनावरोनां मुखमां झेर तो थाय छे, परंतु कोइकना करडवाथी तरत माणस मरणदशाने प्राप्त थाय छे, अने कोइकना करडवाथी तेने क्वचित् पीडा थाय छे, पण तेथी कशी हरकत थती नथी एवी तारतम्यता छे. वली श्रीठाणांग तथा जगवती प्रमुख सूत्रोमां एवुं पण

कहेलुं छे के मनुष्यनुं उत्कृष्ट फेर जे छे ते फेरनां पुद्गल अढीद्वीप प्रमाणे छे अने जघन्य थकी तो अनेक प्रकारे छे.

ए रीते जेम फेरनां पुद्गलमां तारतम्यता छे तेम अशुचिनां पुद्गलमां पण तारतम्यपणुं छे. ते कारणे पूर्वोक्त फेरने दृष्टांते पुष्पवती स्त्रीनी अशुचिनां जे पुद्गल छे ते सर्वोत्कृष्ट अशुचिमय जाणवां. एथी समस्त शुभ लक्षण तथा शुभ गुणोनो नाश थाय छे, माटे अशुचि अवश्य टालवी.

विशेषे नवी आवृत्तिमां प्रथम सज्झायनो भावार्थ तेमज बीजो केटलोएक सुधारो वधारो करी अमोए गये वर्षे छपावेल, परंतु तेनी तमाम नकल खपी जवाथी तेनी आ बीजी आवृत्ति छपाववामां आवी छे. आ ग्रंथनी अंदर शास्त्रविरुद्ध छपायुं होय तो तेनी श्री समस्त संघ पासे क्षमा चाहीए छीए.

ली. प्रकाशक.

१ " आ ग्रंथमां कहेली हकीकत यथार्थ ने शास्त्रोक्त छे एम अमो खात्रीथी कही शकता नथी. "

॥ श्रीगौतमगुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ ऋतुवंती स्त्रीनी सज्झाय प्रारंभः ॥

ऋतुवंती नारीउ परिहरे रे, बीजे वस्त्रे न अभडके ॥
सांके रात्रे नारी मत फरो रे, मत बेसजो तडके ॥ १ ॥

अर्थात् जेने रजोदर्शन थयुं होय अथवा जे बाइने दूर बेसवानुं प्राप्त थयुं होय तेमणे नीचेनी बाबतोनो त्याग करवो. पोते जे वस्त्र पहेर्युं होय ते सिवायनां बीजां वस्त्रने अभडकवुं नहीं तेमज सायंकाले अने रात्रीए एवी नारीउए बहार फरवा नीकलवुं नहीं, अने दिवसना भागमां तडके पण न बेसवुं.

मत भालवी नार मालनी रे, ठांडवां धर्मठाम ॥
प्रभु दर्शन पूजा सद्गुरु रे, वांदवा तजो नाम ॥ २ ॥

मालणने जोवी नहीं अने धर्मस्थानकोमां जवुं आववुं नहीं, कारण के तेथी आशातना थाय. प्रभुनां दर्शन करवां, प्रभुनी पूजा करवा देरासरे जवुं अने सद्गुरुने वांदवा उपाश्रयमां जवुं ए सर्व बाबतोनो ऋतुवंती बाइने माटे निषेध करवामां आव्यो छे.

पडिक्कमणुं पोसह सामायिक रे, देववंदन माला ॥
जलसंघ ने रथजातरा रे, दर्शन दोष टाला ॥ ३ ॥

पडिक्कमणुं, पोसह, सामायिक तथा देववंदन पण ते दिव-

सोमां आवी बाइर्उने माटे निषिद्ध छे तेमज जलयात्राना वरघोडामां के रथयात्राना वरघोडामां जाग लेवो ए पण ऋतुवंती बाइर्उने मांटे नकामां पापनां जातां बांधवा जेवुं छे.

रास वखाण धर्मकथा रे, व्रत पच्चरकाण मेलो ॥
स्तवन सज्काय रास गहुंअली रे, धर्मशास्त्र म खेलो॥४॥

ज्यां रास वंचातो होय, व्याख्यान चालतुं होय तथा धर्मकथा थती होय त्यां पण न जवुं. व्रत पच्चरकाण पण ते दिवसे न करवां, अने स्तवन, सज्काय, रास तथा गहुंली अने धर्मशास्त्र पण वांचवां नहीं.

लखणुं लखे नहीं हाथशुं रे, न करे धर्मचर्चा ॥
धूप दीवो गोत्रजारणां रे, नहीं पूजा ने अर्चा ॥ ५ ॥

ऋतुवंती बाइर्उ हाथथी कांइ लेखनकार्य करी शके नहीं, तेमज धर्मचर्चा करवानी पण मनाइ करवामां आवी छे. धूप, दीवो तथा गोत्रने जारवां विगेरे धर्मकर्मो पण परिहरवां जोइए. पूजा अने अर्चामां पण जाग न लेवो.

संघ जिमण प्रजावना रे, हाथे देजो म लेजो ॥
वलिदान पूजा प्रतिष्ठानुं रे, मत रांधीने देजो ॥ ६ ॥

ज्यां संघ जमतो होय, प्रजावना थती होय त्यां जवुं नहीं, अने हाथथी कांइ आपवुं के लेवुं नहीं. पूजा प्रतिष्ठा माटे रसोइ रंधाती होय अथवा निर्दोष वलिदाननी रसोइ माटे तैयारीउ थती होय त्यां न जवुं अने पोताना हाथथी कांइ रांधी न आपवुं.

पूर्वज पाणी न नामीए रे, देव देवी हनुमान ॥
फल फूल तेल सिंदूर तजो रे, धन धान्य सुदान ॥ ७ ॥

केटलीक बाइर्ड पूर्वजोने पाणी पहोंचाडवा वटवृक्षने पाणी पाय छे ते पण करवुं नहीं. देव, देवीओ अने हनुमान आदि देवोने फल, फूल के सिंदूर चडाववा जवुं नहीं. धन धान्यनुं सुदान पण पोताना हाथे न आपवुं.

भणवुं गणवुं न वांचवुं रे, भोजन पाणी न पावुं ॥
लग्न विवाह सीमंतनां रे, गीत गावा न जावुं ॥ ८ ॥

रजोदर्शनना दिवसोमां भणवा गणवानुं तथा वांचवानुं, पण बंध राखवुं. कोइने भोजन पीरसवुं नहीं तथा हाथेथी पाणी पण न आपवुं. जे स्थले लग्न के विवाह थतो होय तथा सीमंतनो उत्सव थतो होय ते स्थले पण गीत गावा न जवुं.

धान्य सोके नवि झाटके रे, रांधणुं ते केम रांधे ॥
दलवुं न खांडवुं भरडवुं रे, कर्म कठणशुं बांधे ॥ ९ ॥

धान्यने झाटकवुं तथा धान्यमांथी कांकरा वीणवानुं काम पण तेटला दिवसो सुधी तजी देवुं. ज्यारे धान्यने झाटकवानी तथा सोवानी मनाइ करी छे, तो पछी रांधणुं तो रंधायज केम ? अर्थात् रजस्वला बाइए रांधवा सींधवानुं काम न करवुं, तेमज काचा धान्यने पण स्पर्श न करवो. दलवानुं, खांडवानुं तथा भरडवानुं काम जे बाइ आ दिवसोमां करे छे ते बहु कठिन कर्मो उपार्जे छे.

शाक नीलुं मत मोलजो रे, फल फूल सुलचाक ॥
राश्तानी राइ वाटे नहीं रे, मूली औषध पाक ॥ १० ॥

ऋतुवंती बाइए लीलुं शाक समारवा बेसवुं नहीं. फल, फूलने स्वच्छ करवा पण न बेसवुं. राश्ता माटे राइ वाटवी तथा औषध के पाक तैयार करवा माटे उंसलीयां खांडवां ए पण निषिद्ध छे.

खांड साकर गोल डुध दहीं रे, घृत तैल सुखलीउं ॥
खट रसने मत फरसजो रे, वली धसाणुं नडोउं ॥ ११ ॥

खांड, साकर, गोल, डुध, दहीं अने घी, तेल तथा सुखलीनो स्पर्श न करवो. तीखुं, खारुं, गट्युं, कडवुं विगेरे षट् रसोने पण अडवुं नहीं. ते सिवाय तेनां जे पक्वान्न थतां होय तेनो स्पर्श न करवो जोइए.

पडिलाभे नहीं साधु साधवी रे, वस्त्र पात्र अनुपान ॥
रांक ब्राह्मणने हाथे आपे नहीं रे, दाणा लोट ने दान १२

साधु के साध्वी वहोरवा आवे तो ऋतुवंती बाइए तेमने पोताना हाथथी वहोरावबुं नहीं. साधु, साध्वीने वस्त्र, पात्र के अनुपाननी सामग्री पण स्वहस्ते वहोरावी न शके एटलुंज नहीं, पण गरीब ब्राह्मण आंगणे मागवा आवे तो तेने पण दाणा, लोट के एवुं बीजुं कांइ दान आपी शके नहीं.

गाय भेंस ढोर दोवां ने वांधवां रे, छाण वासीडे हाथे ॥
छाश वलोणुं माखण तजो रे, अथाणुं नवि ते आथे १३॥

गाय अथवा भेंस विगेरे ढोरोने दोवां तेमज बांधवां नहीं.

ऋतुवंती बाइए पोताना हाथे छाण के वासीदुं पण न करवुं. छाश वलोववानुं के माखण करवानुं पण तजवुं. तेमज अथाणुं करवानुं होय ते पण न करवुं.

जल भरवाने जावे नहीं रे, छांडे गार ने माटी ॥
छाम उटकंता दोष उपजे रे, वढवाड मेलो घाटी ॥१४॥

पाणी भरवा जवुं नहीं. लींपण गुंपणनुं काम पण एवी बाइथी थइ शके नहीं. एठां वासणो मांजवाथी पुष्पवंती बाइ दोषमां भराय छे.. आवा दिवसोमां कोइनी साथे गाढ क्लेश कंकास पण न करवो.

भरत चित्रामण मत भरो रे, रंगराग मत करजो ॥
जोणुं रोणुं वगोणुं सदा रे, तमे जोवाने वरजो ॥ १५ ॥

भरत के चित्रामणनुं काम पण ऋतुवंती नारीओए परिहरवुं. ज्यां उत्सव–आमोद थतो होय, किंवा ज्यां रंग–राग चालतो होय त्यां न जवुं. तेमज जोणुं, रोणुं अने वगोणुं ए हमेशां ऋतुवंती बाइए तजवां जोइए.

पापड वडी ने सीधावडी रे, भली खांड विखेरो ॥
शेव सुंवाली ने फाफडा रे, वणतां दोष घणेरो ॥ १६ ॥

विवाहप्रसंगे अथवा एवाज बीजा उत्सवसमये बाइओ पोतपोतानां सगावालांओमां पापड, वडी, सीधावडी तथा शेव, सुंवाली अने फाफडा वणवा जाय छे तेम ऋतुवंती स्त्रीओए जवुं नहीं; कारण के एवी अवस्थामां शेव विगेरे वणवामां घणो दोष शास्त्रोमां कह्यो छे.

सांधण सुंधण शीवणुं रे, म करो जोइ विचारी ॥
ढोर खाण वाफवा मत मेलजो रे, रमत वाजी निवारी १७

शीववुं सांधवुं पण पुष्पवंती वाइए परिहरवुं. जाणी जोइने एवा दोषमां चरावुं नहीं. ढोरने माटे जे खाण वाफवामां आवे छे ते पण न वाफवुं अने बीजी रमतो पण त्यजी देवी.

परघर जमवा उजमे रे, मत वेसजो पांते ॥
हाथे जोजन पीरसे नहीं रे, न करे गोष्ठि एकांते ॥ १८ ॥

उत्सव दरमियान कोइने त्यां जमवानुं होय त्यां वधी वाइओ एक पंक्तिए वेठी होय तेमनी साथे ऋतुवंती स्त्रीए अमीने वेसवुं नहीं. ऋतुवंती वाइ पोताना हाथे कोइने पीरसे पण नहीं तेमज कोइनी साथे एकांतमां वार्तालाप पण न करे.

दातण अंजन विलेपने रे, वस्त्राजरण स्नान ॥
दर्पण फूल जोजन राते रे, पाणी मेलजो पान ॥ १९ ॥

दातण, अंजन, सुगंधी ड्रव्योनुं स्वशरीरे विलेपन, स्नान तथा सुंदर वस्त्राजरण न करे, कारण के ए वधा श्रृंगारो छे अने ते आवा अवसरे सजवा ए अयोग्य छे. दर्पणमां मुख जोवुं, फुलनी माला धारण करवी, रात्रीए आहार करवो तेमज पाणी पीवुं विगेरे त्याज्य छे.

ठमीयाल दाल तुम मत करो, मत वेसजो हिंमोले ॥
धाणी दालीया म शेकजो रे, मुख म जरो तंवोले ॥ २० ॥

दालने भरूवामां आवे छे, अथवा तो दालने फोतरांथी मुक्त करवामां आवे छे, ते कार्य पण रजस्वला बाइए न करवुं. हिंमोले बेसवानी पण मनाइ छे. तंबोल खावुं के धाणी दालीया शेकवा ए पण अविधेय छे.

खत पत्र हुंडी न वांचवी रे, नामुं लेखुं न सूझे ॥
हसवुं न बोलवुं दोरूवुं रे, पुष्ट आहार न जुंझे ॥ २१ ॥

खत पत्र के हुंमी वांचवी नहीं. तेमज नामुं लेखुं करवानुं पण काम न करवुं. हसवुं, बोलवुं तथा दोरूवुं विगेरे कर्मो पण परिहरवां. पौष्टिक आहार न करवो.

धातुपात्रे जोजन तजो रे, माटी काष्ठ पापाण. ॥
जोयण सोयण तेहमां रे, खाट पाट म जाण ॥ २२ ॥

धातुपात्रमां जोजन करवुं नहीं. माटीनुं, लाकरूानुं के पापाणनुं पात्र होय तो तेमां जोजन करीने पात्र क्यांइ परठवी देवुं. विचार करतां एम लागे छे के धातुपात्र प्राणने संग्रही शकवानी शक्ति धरावे छे अने तेमां आकर्षक गुण रहेलो छे, तेथी तेमां जोजन करवानी ऋतुवंती बाइने मनाइ करवामां आवी हशे. सुवुं होय तो जोंय उपर सुवुं, तेमां पण खाट पाटनो त्याग करवो.

वुंद कावो तमे मत पीयो रे, मत द्यो हाथ ताली ॥
रासमंरूल मत खेलजो रे, नारी होय धर्मवाली॥२३॥

ऋतुवंती बाइए वुंदनो कावो करीने पीवो नहीं. अर्थात् जेटलां उत्तेजक पीणांउ छे ते वर्जवां. परस्पर हाथनी ताली देवी

नहीं तेमज लेची पण नहीं. रासमंडल के ज्यां अनेक स्त्रीउं मलीने रास रमे छे तेमां भाग लेवा न जवुं.

साजन आवे मलो नहीं रे, लुंछणां लीयो केम ॥
नग्न बालक धवरावीए रे, घरे मत फरो तेम ॥ २४ ॥

साजन आवे तो तेने मलवुं नहीं. ज्यारे मलवानो निषेध थयो त्यारे तेनां लुंछणां के उवारणां तो लेवायज केम ? बालकने धवरावबुं होय तो नग्न करीने धवरावबुं, अर्थात् तेना अंग उपर वस्त्र रहेवा न देवुं. घरमां चोतरफ फरया करवुं नहीं.

मत बेसजो माथुं गुंथवा रे, मत घालजो तेल ॥
नावुं न धोवुं सिंदूर सेंथो रे, मस्तक उलवुं मेल ॥२५॥

माथुं गुंथवा बेसवुं नहीं, तेमज तेल पण माथामां नाखवुं नहीं. न्हावानुं तथा धोवानुं त्यजी देवुं अने सेंथामां सिंदूर न भरवो तथा माथुं पण न ओलवुं.

ऋतुवंती हाथे जल भरी रे, देरासरे जो आवे ॥
समकितबीज पामे नहीं रे, फल नारकीनां पावे ॥२६॥

ऋतुवंती नारी जो हाथमां पाणी लइने देरासरे जाय तो समकितनुं बीज तेने प्राप्त थाय नहीं, माटे एवी स्त्रीए पवित्र देरासरमां पग पण मूकवो नहीं. छतां जो कोइ देरासरे आवे तो तेने नारकीनां दुःखो सहन करवां पडे.

नव क्षेत्रमें रज खालनी रे, नारी वशे अंजाणे ॥
लुंडण चुंकण ने सापिणी रे, पापिणी होये प्राणे ॥२७॥

जे नव क्षेत्रो पवित्र कह्यां छे तेमां ऋतुवंती नारीथी अजाणतां रज पडी जाय तो ते पापिणी नारीने प्राण जतां लुंटण, जुंरुण के सापिणीनो अवतार लेवो पडे छे.

ऋतुवंती यात्राए चालतां रे, मत वेसजो गाडे ॥
संघतीर्थ फरस्यां थकां रे, पडशो पाताल खाडे ॥ २८ ॥

ऋतुवंती नारीए यात्रार्थे जती वखते गाडामां न वेसवुं, अने जो एवी स्थितिमां कोइ संघतीर्थने स्पर्श्यो तो जाणजो के पातालना खाडे पडवुं पडशे; अर्थात् वहु अशातावेदनीय कर्मो जोगववां पडशे.

चोवीश प्होर एकांतमां रे, चोथे दिन नावुं धोवुं ॥
पुरुप वीजो नव पेखवो रे, मुख दर्पणमां न जोवुं ॥२९॥

चोवीश प्होर एटले त्रण दिवस रजस्वला वाइए एकांतमां रहेवुं, चोथे दिवसे न्हाइ धोइ पवित्र थवुं, परपुरुषने जोवो नहीं तेमज दर्पणमां मुख पण न जोवुं.

मूत्र छांटे पावन गायनुं रे, घरमां सहु ठामे ॥
लीपे धूंपे धोवे दिन चोथे रे, जोजन रांधवा पामे ॥ ३० ॥

चोथे दिवसे घरमां वधे गोमुत्र छांटवुं, कारण के ते वहु पवित्र लेखाय छे, अने तेना वडे अशुद्धिनो नाश थाय छे. ते उपरांत घरमां लींपण करी वधे शुद्धि करवी जोइए. आटलुं कर्या पछी ते वाइ रसोडामां जइ रसोइ करी शके.

दर्शन पूजा दिन सातमे रे, जिनजक्ति करवी ॥
व्रत पच्चरकाण वखाण सुणो रे, पुण्य पालखी जरवी ३१

सातमे दिवसे ते बाइ जिनमंदिरमां जवाने माटे योग्य बनी शके; अर्थात् सातमे दिवसे जिनभक्तिनो अधिकार तेने प्राप्त थाय. ते पहेलां नहीं. व्रत पच्चखाण करवां तथा व्याख्यान सांभळवुं ते सातमा दिवसे करी शके. पुण्यनी पालखी भरवी होय तोपण तेने माटे आ सातमो दिवसज योग्य गणाय.

सोळ शणगार सजी भला रे, आवे भरतार पासे ॥
गर्भ अनुपम उपजे रे, संपूर्ण नव मासे ॥ ३२ ॥

आवी नारी सोळे शृंगार सजी पोताना पति पासे आवे. आवी रीतनी विधिने मान आपनारी स्त्रीने पेटे जे गर्भ रहे ते अनुपम थाय, अने बराबर नव मासे सुंदर संताननी प्राप्ति थाय.

दिन सोळमे ऋतुवंतीनो रे, गर्भ उपजवा काळ ॥
चोथे दिवसे गर्भ उपजतां रे, अल्पायुप लहे बाळ३३

ऋतुवंती नारीने सोळमे दिवसे गर्भ उपजवानो काळ प्राप्त थाय छे. सोळमा दिवसने बदले जो चोथे दिवसे गर्भ रहे तो ते संतान बहु टुंकी मुदत सुधी जीवीने मरी जाय, अर्थात् अल्पायुपी थाय.

षट आठ दश बार चौदमे रे, सोळमे दिवसे गाभ ॥
नंदन उपजे गुणनिलो रे, रूप रंग जशलाभ ॥ ३४ ॥

छ, आठ, दश, बार, चौद अने सोळमे दिवसे अर्थात् बेकीना दिवसे जे गर्भ धारण थाय ते रुप-गुणमां अनुपम तथा यशस्वी थाय, एम बुद्धिमान् पुरुषोनुं मानवुं छे.

दोइ जाम रात्रे जोग तजो रे, वीर्य उपजे वेटी ॥
दिवसनो जोग निर्वलो रे, पछी रातनी चेटी ॥ ३५ ॥

रात्रीना बे प्रहर वील्या पछी जोग करवो नहीं. दिवसे जोग करवानो तद्दन निषेध छे. रात्रीनो अवसरज योग्य गणाय छे. बे प्रहर पछी जोग करवाथी पुत्री उत्पन्न थाय एम कहेवानो आशय होय तेम जणाय छे.

बारथी मांझी पञ्चावन्ने रे, वर्षे जणे नारी ॥
नरचोवीश नारीसोलनी रे, सुत होय सुखकारी ॥३६॥

बार वर्षनी अंदरनी तथा पंचावन वर्ष उपरनी नारी साथे जोग करवो अनुचित छे, कारण के तेनाथी पुत्रोत्पत्ति थती नथी. नर चोवीश वर्षनो अने नारी सोळ वर्षनी होय;तो तेनाथी जे पुत्र उत्पन्न थाय ते बहु सुखकारी थाय.

पुरुष वीर्य बहु बेटनो रे, बेटी रक्ते वखाणुं ॥
सम जागे नपुंसक नीपजे रे, प्रभु वचने हुं जाणुं ॥३७॥

पुरुषनुं वीर्य वधारे होय तो पुत्र उत्पन्न थाय, अने स्त्रीनुं रक्त वधारे होय तो पुत्री उत्पन्न थाय; वीर्य अने रक्त उभय सम भागे होय तो नपुंसक संतान प्राप्त थाय; आ वात प्रभुना शब्दोमां होवाथी हुं तेने मानपूर्वक वखाणुं छुं.

मध्यम गर्भ होय रेवतीमां रे, जन्मे मूलक मूल ॥
श्रवणपंचक दश रोगथी रे, गर्भ फूल अनमूल ॥ ३८ ॥

रेवती नक्षत्रमां जो गर्भ रहे तो ते मध्यम थाय, मूल नक्षत्रमां जन्मे तो उत्तम थाय, अने जो श्रवणपंचकमां जन्मे तो

दश रोगथी पूर्ण थाय, अथवा तो गर्भनुं फूल अनमूल-मूल विनानुं थाय.

गर्भ जन्म अभीचीमां रे, पुत्र थाय तो कर्मी ॥
हस्त सूर्ययोगे जन्म भलो रे, सुत होय सुधर्मी ॥ ३९ ॥

अभिजित् नक्षत्रमां बालक गर्भमां आवे तो ते पुत्र कर्मी थाय. हस्त नक्षत्रनी साथे सूर्ययोग थये छते जन्म थाय तो ते बहु सारो अने धार्मिक थाय.

मंगलनो जन्म अश्लेषां रे, बेटी बहुत रीसाल ॥
पूनम मूल सूर्यवारनो रे, चटको चोर छीनाल ॥ ४० ॥

मंगलवारे अश्लेषामां जन्म थाय ते पुत्री बहु रीसाल थाय. मूल नक्षत्र अने सूर्यवार तथा पूर्णिमाने दिने पुत्र जन्मे ते लुच्चो, चोर के छीनालवो थाय.

ज्येष्ठानुराधा रोहिणी विशाखा रे, मृग अश्विनी भरणी
गर्भ पडे सुआवडे रे, पुरुष मेले कां परणी ॥ ४१ ॥

ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी, विशाखा, मृगशिर अश्विनी अने भरणी नक्षत्रमां गर्भ रहे तो ते कां तो पडी जाय, अथवा सुवावडना वखतमां तेनो धणी स्त्रीने तजीने जाय (अर्थात् मरण पामे).

गर्भ जन्म पूर्वा नक्षत्रमां रे, घणुं बालक ढीलो ॥
वादी प्रमादी उत्तरा तणो रे, विद्यावंत छबीलो ॥ ४२ ॥

पूर्वा नक्षत्रमां जे बालक जन्मे ते घणो ढीलो बालक थाय.

उत्तरा नक्षत्रमां जन्मे ते वादी किंवा प्रमादी अथवा सुंदर अने विद्यावंत थाय.

पंच मासे नारीउं गर्भणी रे, मेले पुरुषनो संग ॥
दोष लागे ने बालक भांगे रे, भोग रोग प्रसंग ॥ ४३ ॥

गर्भ धारण कर्या पछी पांच मासे गर्भिणी स्त्रीए पुरुषनो संग त्यागवो जोइए. छतां जे दंपती भोग करे ते भोग अनेक रोगने उत्पन्न करे, तेमज गर्भपातनो पण दोष लागे; कारण के पांच मास पछीना भोगथी गर्भने घणी इजा थवानो भय रहे छे.

छठे मासे बालक आगरु रे, सातमे होये कोढ ॥
रांक तोले मास आठमे रे, नवमे जन्मतां पोढ ॥ ४४ ॥

छठे मासे जे बालक जन्मे ते बहु लांबो वखत जीवे नहीं. सातमे मासे जन्मे ते कोढीउं थाय, आठमे मासे जन्मे ते दीन, दुःखी अने रोगीष्ट थाय तथा नवमे मासे जन्मे ते प्रौढ थाय.

पंच बोले गर्भ उपजतो रे, भरतार विना साचुं ॥
पुरुषजोगे पन्नर भेदशुं रे, गर्भ थावानुं काचुं ॥ ४५ ॥

भरतार विना पांच भेदे करी गर्भ रहेवानुं कह्युं छे अने पुरुषनो योग छतां १५ भेदे गर्भ रहेतो नथी. आ पांच अने पंदर भेद कह्या ते गुरुगम्यथी अथवा शास्त्रोक्तथी समजी लेवा.

पडवे ने छठ अगीआरशे रे, जन्म बालक भोलो ॥
बीज सातम ने बारस तणो रे, जन्म थाय तो गोलो ४६

पडवे, छठे के अगीआरशने दिवसे जन्म थाय तो ते

वालक बहु गोलो थाय, अने बीज, सातम के वारसने दिवसे जन्मे ते गोलो अर्थात् लुच्चो अने मूर्ख थाय.

वली त्रीज आठम ने तेरशे रे, पुत्र होय सुजोगी ।
चोथ चौदश पुत्र नवमीनो रे, करूवो क्रोधी रोगी ॥४७॥

त्रीज, आठम अने तेरशने दिवसे जे बालक जन्मे ते सारा जोग जोगववावालो थाय. चोथ, चौदश अने नवमीए जे पुत्र थाय ते करूवो, क्रोधी अने रोगी थाय.

पांचम दशम ने पूनमनो रे, जन्म होय जाग्यशाली ।
जन्म्यो अमासे तो उलटुं रे, मूर्ख महोटो ते हाली॥४८॥

पांचम, दशम ने पूनमने दिवसे जे पुत्र जन्मे ते बहु जाग्यशाली थाय, अने तेथी उलटी रीते अर्थात् अमासने दिवसे जन्मे ते मूर्ख थाय, एम समजवानुं छे.

मीन लग्न मेष वृषनो रे, पुत्र धारजो गलीयो ॥
लग्न मिथुन कर्क सिंहनो रे, बुद्धिवान ने वलीयो ॥४९॥

मीन, मेष अने वृष राशिमां जे पुत्र जन्मे ते गलीया बलद जेवो ढीलो थाय, अने मिथुन, कर्क अने सिंह राशिमां जन्मे ते बुद्धिवान् थयानी साथे बलवान् पण थाय.

लग्न कन्या तुल वृश्चिकनो रे, पुत्र कुल मांहे दीवो ॥
धन मकर लग्न कुंजनो रे, घणुं जशनामी जीवो ॥ ५० ॥

कन्या, तुला अने वृश्चिक राशिमां जे पुत्र जन्मे ते कुलमां दीपक समान उज्ज्वल थाय अने आखा कुटुंबने अजवाले,

तेमज जे पुत्र धन, मकर अने कुंभ राशिमां जन्मे ते घणो जशनामी तथा दीर्घायुषी थाय.

सूर्य मंगलवारे जन्मीयो रे, बालक रोगीयो तापी ॥
शनि सोम शुक्र टाढो सदा रे, बुध गुरु छे प्रतापी ॥५१॥

रविवारे अने मंगलवारे जे जन्मे ते रोगी तथा क्रोधी थाय, शनिवार, सोमवार अने शुक्रवारे बालक जन्मे ते शांत थाय; अने बुधवारे तथा गुरुवारे जन्मे ते महा प्रतापी थाय.

पुत्र उदासी उद्वेगमां रे, लाभामृत शुभ वेला ॥
रोगे रोगी क्रोधी कालमां रे, चलमां चोकस चाला ५२

उद्वेग चोघडीयामां जन्मे ते बालक उदासी थाय, लाभ, अमृत अने शुभ चोघडीयामां जन्म थाय ते बहु सारो लेखाय छे, रोग चोघडीयामां रोगी अने काल चोघडीयामां क्रोधी तथा चल चोघडीयामां चोकस प्रकारना चाला करनारो पुत्र थाय.

रांध्युं भोजन ऋतुवंती तणुं रे, जाणे लाडु सवाद ॥
भोग भोग माठा मले रे, रोग शोक प्रमाद ॥ ५३ ॥

ऋतुवंती नारीए जे भोजन रांध्युं होय ते भोजनमां लाडु जेटलो स्वाद मानी जे मनुष्य आहार करे तेने अनेक प्रकारना माठा भोगोनो भोग प्राप्त थाय, तथा रोग, शोक अने प्रमादनो पण तेनामां पार न रहे.

वेद पुराण कुरानमां रे, श्री सिद्धांतमां भाख्युं ॥
ऋतुवंती दोष घणो कह्यो रे, पंचांगे पण दाख्युं ॥ ५४ ॥

वेद, पुराण तथा कुरानमां पण लख्युं छे के ऋतुवंती नारी

साथे आप लेनो व्यवहार राखवाथी घणुं पाप लागे छे. आ वातने आपणा जैन सिद्धांतो तथा पंचागी पण टेको आपे छे.

पहेले दाहाडे चांडालिणी कही रे, ब्रह्मघातक बीजे ॥
धोबण त्रीजे चोथे दिवसे रे, शुद्ध नारी वदीजे ॥ ५५ ॥

ऋतुवंती नारीने प्रथम दिवसे चांडालणी जेवी समजवी, बीजे दिवसे ब्रह्मघातक जेवी समजवी अने त्रीजे दिवसे धोबण समान लखववी. चोथ दिवसे न्हाइ धोइने शुद्ध थाय त्यारे पवित्र लेखववी.

डाकण शाकण कामणना रे, मंत्र पामशो खोटा ॥
देवनुं साधन अध्थमशे रे, मत वालजो गोटा ॥ ५६ ॥

जो ऋतुवंतीनो संसर्ग राखशो तो डाकण, शाकण अने कामणना मंत्रो खोटा पामशो अने कोइ देवनुं साधन हशे तो ते पण आथमी जशे, माटे ए बाबतमां गोटा वाळशो नहीं.

ऋतुवंतीनुं मुख देखतां रे, एक आंबिल दोष ॥
वातडी करतां रागनी रे, पांच आंबिल पोष ॥ ५७ ॥

ऋतुवंती नारीनुं मुख मात्र निरखवाथी एक आंबिलनुं प्रायश्चित्त लागे छे, अने रसपूर्वक एटले के जो होंशथी तेनी साथे वात करवामां आवे तो पांच आंबिल करवां जोइए. आटलुं प्रायश्चित्त शास्त्रमां कह्युं छे.

ऋतुवंती आसने बेसतां रे, सात आंबिल साचां ॥
ठठचार तास जाणे जम्या रे, नव गढ होय काचा ॥५८॥

ऋतुवंती नारीना आसन उपर बेसवाथी सात आंबिलनी आलोयण लेवी पडे छे, अने तेने जाणे जमवाथी बार छठनी आलोयण आवे छे अने शीयलना नव गढ कह्या छे ते शिथिल थइ जाय छे.

ऋतुवंती नारीने आभड्यां रे, छठनुं पाप लागे ॥
वस्तु देतां लेतां अठमनो रे, कहो केम दोष भागे ॥५॥

ऋतुवंती स्त्रीने अडवाथी छठनुं पाप लागे छे, अने वस्तु आपवा लेवाथी अठमनो दोष आवे छे. आवो दोष कहो बीजी शी रीते दूर थाय ?

खाधुं भोजन नारी हाथनुं रे, भव लाखनुं पाप ॥
भोग जोग नव लाखनुं रे, वीर बोले जवाप ॥६०॥

आवी नारीना हाथनुं जो भोजन करवामां आवे तो लाख भव-पर्यंत संसारमां भ्रमण करवुं पडे, अनेतेनी साथे भोगकरवामां आवे तो नव लाख भव करवा पडे. आ वात वीर प्रभुए एक प्रश्नना उत्तरमां जणावी छे.

साधु साख नारी भोगथी रे, भोजन पाप अघोर ॥
नरक निगोदमां भव अनंता रे, कर्म बांधे कठोर ॥६१॥

साधु पुरुषनी साक्षीए एम कहीए छीए के एवी नारी साथे भोग करवाथी अने भोजन करवाथी अघोर पाप बंधाय छे, अने नरक-निगोदमां अनंता भव भमवा छतां तेनो छुटको थतो नथी, कारण के ते एवां कठोर कर्मो बांधे छे.

ऋतुवंती खातां भोजन वध्युं रे, ढोरने लाखी नाखे ॥
भव वार भुंडा करवा पडे रे, चंद्र शास्त्रनी साखे ॥६२॥

चंद्र शास्त्रनी साक्षीए कहेवुं पडे छे के ऋतुवंती स्त्रीना भाणामां जे भोजन वध्युं होय ते जो ढोर ढांखरने खावा देवामां आवे तो वार भव भुंडी रीते भमवा पडे.

रजस्वला वहाणे समुद्रमां रे, वेसतां वहाण डोले ॥
भांगे कां लागे तोफानमां रे, माल वामे कां बोले ॥६३॥

रजस्वला बाइ जो वहाणमां वेसे तो ए वहाण पण डोलवा लागे छे, अने कां तो वचमां भांगी जाय छे के तेने तोफान लागे छे, तेथी अंदरनो माल पाणीमां वामवो पडे छे अथवा वहाण डूबी जाय छे.

लख भव जाण अजाणमां रे, लघु वड भव आठ ॥
भव लाख ने वाणुं घातमां रे, एम शास्त्रनो पाठ ॥ ६४ ॥

उपर कह्यो ते दोष जो जाणतां थाय तो लाख भव अने अजाणतां पण थइ जाय तो नाना मोटा आठ भव करवा पडे, अने एक लाख ने वाणुं घातो सहन करवी पडे, एवो शास्त्रनो पाठ छे.

धर्मवाली नारी नाइ धोइ रे, संगमें भोजन खाय ॥
पुत्ररत्न पामे संपदा रे, देवलोकमां जाय ॥ ६५ ॥

धर्मवाली बाइ चोथे दिवसे न्हाइ धोइने सौ साथे भोजन करे. आवी बाइने जे पुत्र थाय ते रत्न जेवो थाय अने बहु संपत्ति प्राप्त करे एटलुंज नहीं, पण एवी बाइ आयुष्य पूरुं थये देवलोकमां जाय.

कमला राणी प्रज्ञु वांदतां रे, वार लाख नव कीधा ॥
मालण फूल अटकावमां रे, लख नव फल लीधां ॥६६॥

कमला राणी ऋतुवंती हती त्यारे जूलथी तेणे प्रज्ञुने वंदना कीधी. श्रार्थी करीने तेने वार लाख नव सुधी संसारअटवीमां परिभ्रमण करवुं पड्युं. एक मालणे एवीज स्थितिमां फूल वेच्यां, तेथी तेने एक लाख नव करवा पड्या.

ढुंढ नणे फूटुं गुंवडुं रे, धर्माधर्म विरोध ॥
शास्त्र विना मते माचता रे, लहे नरक निगोद ॥ ६७ ॥

ढुंढीश्रा लोको एम कहे छे के ए तो फुटेला गुंवमा जेवुं छे, तेथी ते धर्माधर्ममां विरोधरूप नथी, पण श्राम कहेनाराउ शास्त्रनी साक्षी विना पोताना मत प्रमाणे वोले छे, तेथी करीने तेउ नरक निगोदना अधिकारी थाय छे.

एम सांजली ऋतुवंतीनो रे, अधिकार आनंदे ॥
घर मांहे सावचेत राखजो रे, नाख्युं वीर जिणंदे ॥६८॥

श्रा प्रमाणे ऋतुवंती नारीनो जे अधिकार कह्यो छे तेनुं आनंदथी वरावर मनन करी स्मरणमां राखवो अने ते प्रमाणे वहुज सावचेतीथी घरमां वर्त्तन राखवुं. ए प्रमाणे कहेलुं छे.

निज धर्म पालवा नारीउ रे, नली सज्फाय सुणजो ॥
श्रोल ग्रामे तपागछमां रे, श्रावक श्राविका सुणजो॥६९॥

पोतानो धर्म पालवानी रुचिवाली वाइए श्रा सज्फायनो सारी रीते श्रन्यास करवो. श्रा सज्फाय श्रोल गाममां लखायेली

छे, तेथी ओलनिवासी तपगछना श्रावक तथा संबोधीने कहे छे के हे बाइओ तथा भाइओ! आ सज्झाय रीते सांभलजो.

संवत् अढार पांसठमां रे, दीवाली लटकाली ॥ कहे खीमचंद शिवराजनो रे, करजो धर्म संभाली १०

आ सज्झाय संवत् १८६५ मां रची छे, अने प्रसंग पण दीवालीनो हतो. लखनार पोतानुं नाम आपतां कहे छे के हुं शिवराजनो पुत्र खीमचंद कहुं छुं के सौ कोइ पोतपोतानो धर्म बराबर संभालीने पालजो.

॥ अथ छोतिभास प्रारंभः ॥ राग रामग्री ॥

॥ वीर जिनेश्वर पाय प्रणमीने, प्रणमीए शारद माय रे ॥ छोतिनिवारण भास भणेशुं, जेम पापमल जाय रे ॥ छोति निवांधी वंश न वाधे, धर्म कर्म नवि कोय रे ॥ एम जाणीने छोति निवारो, जेम वांछित फल होय रे ॥ छो० ॥ १ ॥ जे हिंसादिक महामल छोति, ते लोपे जीव ज्योति रे ॥ ते तो टले तपानल तापे, जो दयारस व्यापे रे ॥ छो० ॥ २ ॥ छोति मूर्त्ति स्त्रीधर्मिणी जाणो, तेहनो भय घणो आणो रे ॥ जेहनो दोष दीसे निज नयणे, वली कह्यो जिनवयणे रे ॥ छो० ॥ ३ ॥ जेह छोति धातु-

रस फूटे, पीठ कणकवांक त्रूटे रे ॥ विकसी थाय तिम्कि वहु लागे, गरुगुंवरू रोग जागे रे ॥ ठो० ॥ ४ ॥ दीठे अंध होय नेत्र रोगी, पंढ होये संजोगी रे ॥ गंधे अन्नादिक कश्मल थाये, पापमी पमी धावलाये रे ॥ ठो० ॥ ५ ॥ वेमी बुडे जेहने संगे, जावा रंग तरंगे रे ॥ स्नानजले वेल वृक्ष सुकाये, फूल फल नवि थाये रे ॥ ठो० ॥ ६ ॥ एम जाणी वीजे घरे राखो, तेहशुं नाप म नापो रे ॥ वस्तु वानी आजरूवा न दीजे, दूर थकांज रहीजे रे ॥ ठो० ॥ ७ ॥ पुण्यवंत सुणो सविचारी, एह दोप होय जारी रे ॥ जुक्त्वा तो उपवास करीजे, स्नान करी वोलीजे रे ॥ ठो० ॥ ८ ॥ वीजे दिन स्नान जव कीजे, तव वस्त्र जीजवीजे रे॥अवर वस्त्र धोयां पहेरीजे,जोजन निरस लीजे रे ॥ ठो० ॥ ए ॥ जेणे नाजने जोजन कीजे, ते घर मांहे न लीजे रे ॥ केहने ते अडवा नवि दीजे, जूमि मांहे बूजीजे रे ॥ ठो० ॥ १० ॥ नदी सरोवरे स्नान न कीजे, तेह मांहे शोच न लीजे रे ॥ तेणे थाय अपवित्र पाणी, डुःख सहुनी खाणी रे ॥ वो० ॥ ११ ॥ [illegible] दिन एम पालो,

पाप पखालो रे ॥ पांचमे दिन पवित्र होइ आवो, जेम पुण्यफल पावो रे ॥ ढो० ॥ १२ ॥ जेम वन मांहे दवे जीव बले, तेम तिहां तेणे जले रे ॥ अ-गल नीर नवि खरचीजे, जीव यतन घणुं कीजे रे ॥ ढो० ॥ १३ ॥ एम न राखे जे नर निज गोरी, तेह पापरथ धोरी रे ॥ एम न रहे जे नारी असारी, ते पामे दुःख जारी रे ॥ ढो० ॥ १४ ॥ शाकिनी जेम कुटुंबने खाये, नरक मांहे ते जाय रे ॥ दुःख देखे ते त्यां अति घणां, छेदादिक वध बंध तणां रे ॥ ढो० ॥ १५ ॥ सापिणी वाघणी रींछणी सिंहणी, श्यालिणी शुनी होय कागणी रे ॥ अशुद्ध योनिमां पछी दुःख पामे, जवोजव पातक जामे रे ॥ ढो० ॥ १६ ॥ एम जाणी राखे नर नारी, जेह रहे सवि-चारी रे ॥ ते सहु सुख जोगवे संसारी, पछी मुक्ति वरे नारी रे ॥ ढो० ॥ १७ ॥ एम जाणी स्त्रीधर्म-मल टालो, निज मन मेल पखालो रे ॥ ब्रह्म-शांतिनी वाणी संजालो, निर्मलाचार व्रत पालो रे ॥ ढो० ॥ १८ ॥ इति सज्जाय ॥

॥ अथ सूतकनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ सरस्वती देवी समरुं माय, सद्गुरुने वली लागुं पाय ॥ विचारसार ग्रंथथी कहुं, ते परमारथ जाणो सहु ॥ १ ॥ सूतक तणो हुं कहुं विचार, सांजलजो नर नारी सार ॥ जेने घेर जन्म थाय ते जाण, दश दिवसनुं कह्युं प्रमाण ॥ २ ॥ एटलो पुत्र जन्मनो सार, पुत्री जन्मे दिन अगीआर ॥ मृत्यु घरनुं सूतक दिन बार, ते घेर साधु न व्होरे आहार ॥ ३ ॥ ते घरनुं जल अग्नि जाण, जिनपूजा नव सूजे सुजाण ॥ एम निशीथचूर्णीमां कह्यो, ए तत्त्वार्थ गुरुमुखथी लह्यो ॥ ४ ॥ निशीथ सोलमे उद्देशे सार, ए महंत मुनि कहे अणगार ॥ जन्म तथा मरण घर जाणो सहु, डुगंछनिक गुरुमुखथी लहुं ॥ ५ ॥ एम व्यवहार जाष्यमां वली, जापे सूधा साधु केवली ॥ मलयगिरिकृत टीका जाण, दश दिन जन्म सूतक परिमाण ॥ ६ ॥ हवे सांजलो जिनवाणी सार, एम जापे सूधा अणगार ॥ विचारसार प्रकरणे सार, एम जापे श्रीजिन गणधार ॥ ७ ॥ मास

एक प्रसवतीने धार, प्रतिमादर्शन न करे वि ॥ दिवस चालीश जिनपूजा सार, नही करे स्त्री ए व्यवहार ॥ ८ ॥ साधु पण नव लीये आहार, तिहां सूतके कहे अणगार ॥ तेना घरनां माणस होय, जन्म मरणनुं सूतक जोय ॥ ९ ॥ न करे पूजा दिन बार ते जाण, समजी लेजो चतुर सुजाण ॥ मृतकने अडकणहारा कह्या, चोवीश प्होर ते साचा सह्या ॥ १० ॥ पडिक्कमणादिक न करे जाणं, एम भाखे ते त्रिभुवनजाण ॥ वेशना पालटहारा कह्या, आठ प्होर ते साचा सद्दह्या ॥ ११ ॥ मृतक कांध देनारा जाण, अन्य ग्रंथथी लेजो सुजाण ॥ सोल प्होर पडिक्कमणुं नव कह्यो, ए जिन भाख्यो आगम लह्यो ॥ १२ ॥ जन्मनुं सूतक दश दिन सार, जन्मने थानक मास विचार ॥ घरना गोत्रीने दिन पांच, सूतक टाले गुरु भाखे साच ॥ १३ ॥ जन्म हुओ तेहीज दिन मरे, वली देशांतर फरतां मरे ॥ संन्यासी अनेरो मृत्युक होय, सूतक दिन एक जाणो सोय ॥ १४ ॥ दास दासी घरमां मृत्यु होय, दिन एक बे प्रणनुं

१ मोढे बोलीने न करे, मौनपणे करी शके.

सूतक सोय ॥ आठ वर्षथी न्हानो मरे शिशु, तो दिन आठनुं सूतक इस्युं ॥ १५ ॥ ए जन्म मरणनुं सूतक कह्युं, अन्य ग्रंथमां एमज लह्युं ॥ वली विचारसार मांहे सार, एम नाखे ठे श्री अणगार ॥ १६ ॥ ऋतुवंती नारी तणो विचार, त्रण दिन लगे जंगादिक सार ॥ नव छूवे कुलवंती नार, पमिक्कमणां दिन चार निवार ॥ १७ ॥ तपस्या करतां लेखे सही, दिन पांच पठी जिनपूजा कही ॥ वली स्त्रीने रोगादिक होय, दिवस त्रण उल्लंघ्या सोय ॥ १० ॥ रुधिर दीठामां आवे सही, तेनो दोष नव जाणे कहीं ॥ विवेके करी पवित्र थाय नार, पठी जिनदर्शनथी लहे जवपार ॥ १ए ॥ एम जिनप्रतिमा पूजा करो, जवसायर लीलाए तरो ॥ वली साधु सुपात्रे दीजे दान, जेम पामो तमे स्वर्ग विमान ॥ २० ॥ जिनपडिमा अंगपूजा सार, न करे ऋतुवंती जे नार ॥ एम चर्चरी ग्रंथ मांहे विचार, ए परमारथ जाणो सार ॥ २१ ॥ वली जाख्यो सूतक विचार, जाखुं सद्गुरु तणे आधार ॥ तिर्यंच तणो लवलेशज कहुं, ते आगमथी जाणो सहु ॥ २२ ॥ घोमा नैंस ऊंट घरमां होय,

प्रसवे दिन एक सूतक जोय ॥ गाय आदिनुं मरण जव थाय, कलेवर घरथी बाहिर जाय ॥ २३ ॥ एटली वेला सूतक होय, दास दासी कन्या घर सोय ॥ जन्म होय के मृत्यु जाण, त्रण रातनुं होय प्रमाण ॥ २४ ॥ जेटला मासनो गर्भज पडे, तेटला दिवसनुं सूतक नडे ॥ भेंस विआयां दिन पंदर दुध, ते मांहे तो कहीए अशुद्ध ॥ २५ ॥ गौदुधनुं कह्युं प्रमाण, दिवस दश जाणो गुण-जाण ॥ टाली दिन आठ पछी ते दुध, ते पहेलां तो कहीए अशुद्ध ॥ २६ ॥ गौमूत्र मांहे चोवीश प्होर, संमूर्छिम जीव उपजे ते जोर ॥ सोल प्होर भेंसनी नीत मांहे, संमूर्छिम जीव उपजे ते मांहे ॥ २७ ॥ द्वादश प्होर बकरीनी नीत मांहे, आठ प्होर गाडर नीत ज्यांय ॥ एहमां संमूर्छिम उपजे सही, एह वात गुरुमुखथी लही ॥ २८ ॥ ए सूतकनो कह्यो विचार, थोडा मांहे भाख्यो सार ॥ सूतक विचार आगममां कह्यो, जिनेश्वर मुखथी सूधो लह्यो ॥ २९ ॥ सोहम शुद्ध परंपरा जाण, तेजे करी दीपे जेम भाण ॥ अचलगच्छे वंदु अणगार, श्री पुण्यसिंधु

सूरीश्वर सार ॥ ३० ॥ भणे सांभले जे नर नार, पाले ते तो शुद्धाचार ॥ अनुक्रमे अमर विमाने सोहाय, रयणाभूषण धरी मुक्ते जाय ॥ ३१ ॥ संवत् ओगणीश ओक्षोतरो सार, श्रावण कृष्ण पंचमी हितकार ॥ जखौ बंदर चोमासुं करी, चोपाइ सूतकनी कही स्थिर करी ॥ ३२ ॥ श्रावक श्राविका पाले जेह, श्री जिनआणाए चाले तेह ॥ सहु ऋद्धि सिद्धि तणां सुख सार, वली मुक्ति तणां सुख लहे निर्धार ॥ ३३ ॥ इति सूतकनी सज्झाय समाप्त ॥

॥ अथ रजस्वला स्त्रीना अधिकारनी गाथा ॥

जा पुप्फवई जाणी,–उण नहु संका करेइ नियचित्ते ॥ गिण्हइ अ भंडगाइ, तथ्थय दोसा बहू हुंति ॥ १ ॥

अर्थः–जे पुष्पवती स्त्री जाणी करीने पोताना चित्तने विषे शंकाय नहीं अने हांडलादिक ग्रमने आभडे तेने घणा मोटा दोष लागे ॥ १ ॥

लच्छी नासइ ~ ˊ रोगायंतह वहंति

अणुवरयं ॥ गिहदेव य मुञ्चंति, तं गेहं
जे न वज्जंति ॥ २ ॥

अर्थः—तेनी लक्ष्मी दूर नासी जाय तथा रोग आतंक विषम अनिवारक थाय, अधिष्ठायिक देव तेनुं घर मूकी जता रहे. ए रीते आचरुटेवालानुं घर जे नथी मूकतो तेने पूर्वोक्त वानां थाय ॥ २ ॥

जइ कहवि अणाभोगे, पुरिसे वि य छिवइ
नियमहिलाए ॥ एहायस्स होइ सुद्धी, इय
भणियं सव्वलोएसु ॥ ३ ॥

अर्थः—जो कदाचित् अजाणतो थको कोइ पुरुष ते स्त्रीने स्पर्श करे तो स्नान करवाथी शुद्धि थाय ए वात सर्व लोक मांहे कहेली छे ॥ ३ ॥

विहि जिणभवणे गमणं, घर पडिमा-
पूअणं च सज्झायं ॥ पुप्फवइ इत्थीणं,
पडिसिद्धं पुव्वसूरीहिं ॥ ४ ॥

अर्थः—विधिपूर्वक जिनभवनने विषे जावुं, घरमां देवपूजा करवी अने स्वाध्याय करवो, एटलां वानां पुष्पवती स्त्रीने पूर्वसूरिए निषेध्यां छे ॥ ४ ॥

आलोअणा न पढइ, पुप्फवइ जं तवं करे नियमा ॥ नविअ सुत्तं अन्नंता,गुणइ तिहिं दिवसेहिं ॥ ५ ॥

अर्थः–पुष्पवती स्त्री त्रण दिवस सुधी गुरु पासेथी आलोयण लेवाने अर्थे पोतानुं पाप प्रकाशे नहीं, वली तपस्या न करे, नियम करे नहीं, सूत्र गणे नहीं. वली अन्य पण कांइ चापण न करे ॥ ५ ॥

लोए लोउत्तरिए, एवंविह दंसणं समुद्दिठं ॥ जा जणइ नत्थि दोसा, सिध्दंत विराहगो सोउ॥ ६

अर्थः–लोक मांहे तथा लोकोत्तर एटले जिनशासन मांहे उपर प्रमाणे कहेलुं छे. जे कहे छे के एमां दोष नथी तेने सिद्धांतना विराधक जाणवा ॥ ६ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ स्त्रीने शील पालवाना यत्किंचित् बोलो लखीए छीए ॥

१ पिता बांधव प्रमुख कोइ पण पुरुषनी कोटे वलगी मलवुं नहीं. २ कोइ परपुरुषने नवरावबो नहीं. ३ कोइ परपुरुषनुं उवटणादिकथी अंगमर्दन करवुं नहीं. ४ कोइ परपुरुष साथे पत्रादिकथी खेलवुं नहीं. ५ कोइ परपुरुषनो जेजे पकमी वात

अमारा तरफथी **जैन पंचांग** प्रति वर्षे नवा सु
उत्तमोत्तम चित्र साथे बहु
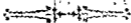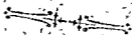
अमारुं जैन पंचांग जैनपणानुं अभिमान धरावनार प्रत्येक गृहस्थे पोताना घरमां लटकावी राखवुं जोइए. वार्षिक जैन पर्वो तथा रात्रि दिवसना चोघडीयां तेमज बीजी हकीकतोनो तेमां समावेश थाय छे. पंचांगनी सुंदरता तथा मनोहरता अपूर्व छे.

पर्वाधिराज पर्युषण तथा दीवाळीना माटे सारां सस्तां उत्तम भावनाथी भरेला क्षमापनानां मारवाडी तेमज गुजराती भाषानां कार्डो तथा कंकोत्रीओ फेन्सी तेमज मनमोहक अमारे त्यां जथाबंध प्रकट थाय छे अने तद्दन कीफायत भावे वेचाय छे, माटे ग्राहकोए मंगाववा कृपा करवी.

श्रावक भीमसिंह माणेक,
जैन पुस्तको वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.
मांडवी, शाकगली–मुंबइ.

ॐ

खाद्य-वस्तु विचार

इसको

श्रीमती दर्शनीय ध्यान निष्ठा प्रवर्तक-पद धारिका

श्री सुवर्णश्रीजीमहाराज और तत्शिष्या

श्रीलालश्रीजी महाराज के उपदेशात्

उदरामसर निवासी

हजारीमल चान्दमल बोथरा

की तरफ से भेट

वीरसं० २४५७ अमूल्य वि० सं० १९८७

* भूमिका *

इस छोटी सी किताब के प्रकाशित करने का जो हेतु है वो पाठक-वर्ग से छिपा न रहेगा।

इस में संक्षेप तथा मनुष्य के भोग में आने वाली वनस्पति की पूर्ण आवश्यकता के मामलों दी गई है।

हम लोग शाही-शहर बीकानेर के सन्निकट रहते भी ऐसे योग्य मुनियों की सोहबत में नहीं आये कि हमें उचित ज्ञान की प्राप्ति हो और गृहस्थ-धर्म में अनावश्यक दोषों से बचे रहें।

भाग्योदयात् हमारे यहां प्रातः स्मरणीय श्रीमति ध्यान-निष्ठा श्री सुवर्णश्रीजी महाराज के पदार्पण हुए और आपका निष्पक्ष और प्रत्येक प्राणी मात्र के लाभ-दायक उपदेश को श्रवण कर जिस का एक अंश हमारे गृहस्थाश्रमी बन्धुजनों के हितार्थ प्रकट करते हैं, आशा है इससे बन्धुगण अनावश्यक दोष से बचने का अवश्य लाभ लेंगे।

भवदीय—

माणकचन्द हजारीमल बोथरा

ॐ

खाद्य-वस्तु विचार

इसको

श्रीमती दर्शनीय ध्यान निष्ठा प्रवर्त्तक-पद धारिका:

श्री सुवर्णश्रीजीमहाराज और तत्शिष्या
श्रीलाभश्रीजी महाराज के उपदेशात्

उदरामसर निवासी

हजारीमल चान्दमल बोथरा

कीतरफ से भेट

वीरसं० २४५७ अमूल्य वि० सं० १९८७

* भूमिका *

इस छोटी सी किताब के प्रकाशित करने का जो हेतु है वो पाठक-वर्ग से छिपा न रहेगा।

इस में संक्षेप तथा मनुष्य के भोग में आने वाली वनस्पति की पूर्ण जानकारी की गई है।

हम लोग शाही-शहर बीकानेर के सन्निकट रहते भी ऐसे सुयोग्य मुनियों की सोहबत में नहीं आये कि हमें उचित ज्ञान की प्राप्ति हो और गृहस्थ-धर्म में अनावश्यक दोषों से बचे रहें।

भाग्योदयात् हमारे यहां प्रातः स्मरणीय श्रीमति ध्यान-निष्ठ श्री सुदर्शनश्रीजी महाराज के पदार्पण हुए और आपका निष्पक्ष और प्रत्येक प्राणी मात्र के लाभ-दायक उपदेश को श्रवण कर उस का एक अंश हमारे गृहस्थाश्रमी बन्धुजनों के हितार्थ प्रकट करते हैं, आशा है इससे बन्धुगण अनावश्यक दोष से बचने का अवश्य लक्ष लेंगे।

भवदीय—

माणकचन्द हजारीमल चोपड़ा

बन्धुगणो !

हरएक बाबत एक सीमा, (हद में रहे यही सदाचार की वृत्ति कहलाती है। हमारे महान् पूर्वाचार्यों ने इसके लिये अनेक तरह से जो जो हम लोगों के अर्थ आदेश किये हैं उन की तर्फ यदि हम ध्यान दें तो वो आदेश [फर्मान] उभय-पक्ष- "व्यवहार और विशुद्ध-धर्म" की प्रवृत्ति में बड़े ही लाभदायक उपादेय प्रतीत होते हैं। इन आदेशों को हम मुख्य दो हिस्सों- "आहार और व्यवहार" में बांट सकते हैं।

आज उन में से एक वनस्पति के बाबत कुछ उल्लेख करता हूँ- वनस्पति मुख्य दो प्रकार की होती है, एक साधारण, और दूसरी प्रत्येक। साधारण का रूप है—

अणंताणंत जीवाणं सरीर–मेगो साहारणा

याने अनंत अनंत जीवों का एक ही शरीर रूप पिण्ड हो, उन्हें साधारण कहते हैं, जैसे-कंद-मूलादि। प्रत्येक वनस्पति का रूप है-

" एग सरीरे एगो जीवो जसितु तेय पत्तेया,

फल- फूल-छल्लि, कट्ठा, मूला पत्ताणि बीयाणी। "

अर्थ—एक शरीर के अन्दर एक ही जीव हो उन्हें प्रत्येक वनस्पति कहते हैं, फिर जिन में यह भी लक्षण—फल-फूल छाल, काष्ठ मूल, पत्ते और बीज हो।

इन के प्रकारान्तर भेद-कंद-मूलादि साधारण के चौदालाख [१४०००००] और प्रत्येक वनस्पति के दशलाख [१००००००] माने गये हैं। इस तरह दोनों मिल चोवीस भेद वनस्पति के होते हैं।

यदि देखा जाय तो इनका शतांश भाग भी कोई मनुष्य अपने जीवन में भोग उपभोग नहीं कर सकता। पर नामाङ्कित नियम न रहने से समाम वनस्पति के भोग का दोष हर एक व्यक्ति को भाता रहता है, जैसे—वेश्या को पुरुष संख्या का नियम न रहने से जगतजनी का दोष।

फिर इन्द्रियों के विषयों की इच्छा का अनुरोध [रोकना] ही परम-धर्म-तप और नियम माना गया है, अतः वनस्पत्यादिकों की तरफ से इच्छा का संकोच करना भी धर्म रूप समझा जाता है।

पुनः—आज से पहिले हमें शास्त्रीय प्रमाणों से हि वनस्पति में जीवत्व मानना पड़ता था, पर आज के सांइन्स ने यह प्रत्यक्ष बता दिया कि वनस्पति में जीव है, और उसके हर एक पत्ते को खींचने से उसे तकलीफ [मुर्झाई]होती है। अतः-यदि वैसे मनुष्य पर नियम का अंकुश न हो तो अपदर्थ निष्प्रयोजन [विना जरूरत के] मूक वनस पति जीवों के तकलीफ का कारण होगा।

यह तो धार्मिक दृष्टी से इनका लाभालाभ दिखाया गया अब शारिरिक दृष्टी से भी इनमें लाभ है वो यह है—

देश काल को लेकर हमारे विद्वान वेत्ताओं ने मनुष्य के लाभदायक वनस्पति—फल फूल कन्द शाकादिकों को बतला दिये हैं, क्योंकि—यह तो प्रवाह रूप प्राकृतिक नियम से सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य का आहार वनस्पति हि है, और इसके बाबत भारत और युरोप में कितनी हि किताबें लिखी हुई मोजूद है।

हमीं आप-जनों के हिताहित दायक वनस्पति के गुण दोष हमारे विज्ञानकों ने खूब खोज कर बतला दिये हैं, पर दुःख की

बात तो यह है कि हम अपने व्यवहार में आने वाली हि खाद्य-वस्तु के पूरे गुण दोष नहीं जानते तो अन्य वनस्पति के गुण दोषों को क्या जान सकते हैं? अतः अगर हमें नियम का अङ्कुश नहिं है तो संभव है किसी वक्त अज्ञान-वस्तु के रंगरूप आकार या स्वाद आदि की सुन्दरता देख हम अपनी इच्छा को न रोक सकें और उसके भोग उपभोग से नुकसान उठालें।

हम देखते हैं आहार विहार की सीमा न रखने वाले हमारे भ्रात-बन्धु जरकों कि संख्या में सम्पूर्ण अवस्था में हि काल के कवल बन जाते हैं।

इस विषय में 'उपदेशरत्नाकर' आदि कथात्मक ग्रंथ में बहुत से प्राचीन दृष्टान्त भी विद्यमान हैं। अतः अब किं बहुना। इस लिये उभय-पक्ष में हितकारी हमारे पूर्वाचार्यों के आदेश पर प्रत्येक प्राणी अवश्य ध्यान दें यही मेरी अभिलाषा है।

यदि पाठक इसे पढ़कर कुछभी लाभ उठा सकेंगे तो इस छोटेसे ट्रेक्ट का श्रम सफल समझा जायगा। श।

भवदीय---

लक्ष्मीचन्द्रःबृ०यतिः

॥ नामावली ॥

फल–वर्ग

आम जाती	खिरनी	कटहर [कटैर]	बड़हर,
सेतूत,	मखाना,	केला,	सींघाड़ा
नारियल,	अनार जाती	खरबूज जाती	द्राक्ष जाती
तरबूजा जाती	किसमिस	खीरा	खजूर जाती
सुपारी	बादाम जाती	बीजा	सेव जाती
कैथ [कपीठ]	नास पाती	नारंगी	पीलू
तेंदू	अखरोट	फालसा	बीजोरा
आमन	चकोतरा	बेर जाती	जंभीरी
उन्नाव	नींबू मीठे	आलूबुखारा	नींबू खट्टे
चिरौंजी	कमरख	इमली	अमलबेत
करेरी के फल	काली फल	नींबोली	करौंदा
सरधा	रायण [खिरनी]	अमरूद जाती	खीरा ककड़ी
इलायची जाती	बालम ककड़ी	लौंग	खारक जाती
काचर जाती	खजूर जाती	मतीरा	पाल
पिस्ते	अंजीर जाती	गांठिये	डांसरिया
आड़ू	फोकस	लीचू	चीकू
मोसम्मी	रामफल	पानबादाम	कटेल [फनस]
गुलाबजामन	लोहकाट	हरी पीपल	सपेतो
अनन्नास		सीताफल (सरीफा)	
गुंदी, गुंदा जाती		सेलड़ी [गांठा]	
सुपारी सुफेद आदि जाती		लाखी ककड़ी जात	
काली और सुफेद मीर्च		खुरमाणी [अखरोट]	

पपोता (परंड ककड़ी) कमंडलगट्टा (डोडा)

पुष्प-फूल-वर्ग

गुलाब जाती	कर्णिकार	कमल जाती	अशोक
पवती	बाणपुष्प	कुमुदिनी	पियाबांसा
सेवती	कुंद	वसंती	मुचकुंद
वार्षिकी	तिलक	चमेली जाती	सेंदूरिया
जूही	अगस्तिया	सुवर्ण जूही	दवना
चंपा	गेंदा	मौलसिरी	कदंब
गुलसिरी	सरगिल	बकुल	मदनमस्त
कदंब	मरवा	कुब्जक	मेंदी
मल्लिका	तुलसी	माधवी	गुलहजारा
केवड़ा	सूर्यमुखी	केतकी	गुल दावदी
सुवर्ण केतकी		पठानी जाती	

। शाक वर्ग ।

। पत्ति ।

वथुआ जाती	पित्त पापड़ा के पत्ते	पोई का साक	पातगोभी
मरसा जाती	पटोल के पत्ते	जलचौलाई	कसौंदी
वनचौलाई	चने की भाजी	पालक	सरसों की भाजी
खट्टा पालक	रतनजोत (तिनपत्ती) भांगीका	पुनर्नवा [साठा]	
कलंबी	सोया	लोणी जाती	धांना
चांगेरी	पोदीना	चूका	मीठा नींबू के पत्ते
चंचु	हींग के पत्ते	कुरकुर	आक के पत्ते
हिरियाली	कौलो का पत्ता	मूली के पत्ते	मेथी की भाजी

गोमा के पत्ते सोवा की भाजी भजवायन के पत्ते तुलसी के पान
पमार के पत्ते अफीम की भाजी धुहर के पत्ते धरबी के पत्ते
चौलाई [बंदला] जाती गिलोय के पत्ते
लेकू की भाजी करड़ी की भाजी पुरजण की भाजी
भांग के पत्ते आदि आगर वेल के पत्ते

॥ फूल शाक वर्ग ॥

केले का फूल सहजने का फूल सेमर के फूल कचनार के फूल
राय डोडी फोग केर के फूल (बाटो) आक के फूल
कोंपें के फूल गोभी का फूल

॥ दांतुन ॥

बबूल के नीम के वज्रदंती केर के,
गुग्गलो के

॥ फल शाक ॥

पेठा कोला तूंबी जाती ककड़ी जाती करेला
तोरई गलका तोरई परवल कंदूरी मिट्ठी
सेम सुधरा सेम सहजने की फली चिनताक[बेंगन]जाती
टींडसी कंटोला करेदया सरसों की माल
अफीम की डोडी टमाटा सींगा की फली भींडी
ककोड़ा गवार पाठे की फली टींडोड़ा मटर
कमलगट्टा कामरक गवार फली मूंगों की फली
मोठों की फली चंवला की फली बालोड़ फली दूधी
मोचे मोगरी जाती सोगरी आंवला
दाख केरिया लीला कांगरी सांगरी ग्वारमेथी
महुवा पपीटा कीरोली पींपं

धाणा जीरा राई पावलिये
कुमटिये केर [illegible]

कन्द शाक

सूरण आलू अरवी मूली जाती
गाजर केराकन्द मानकन्द वाराही कन्द,
महिष कन्द कोलाकन्द विष्णुकन्द धरणी कन्द
मशुल कन्द चन्द्राज कन्द कांदा लहसुन
सकरकन्द अदरक हलदी रतालू
हाल गांठगोभी [करमकल्ला] । चोपचीनी कन्द भू फोड़
मूंगफली मोतिये

॥ धान के सुट्टे ॥

गेहू के सुट्टे मूंग के सुट्टे छोले चवले छोले चने
छोले जवार के सुट्टे बाजरी के पूंख छोले मोठ मक्की के सुट्टे

आचार आदि

आचार सभी मुरब्बा सभी चटनी सभी ठंढाई सभी
यह घर हाथ की अगर तयार हो और उन में वस्तु का पता नहीं हो तथापि ग्राह्य समझी जाती है।

॥ आवश्यक सूचना ॥

नियम एक तो नाम मात्र से होता है और दूसरा अवस्था-[illegible]-से। जो नाम-मात्र से वस्तु छोड़ी जाती है उसे हरो [illegible] किसी अवस्था में ले नहीं सकते। और अन्यथा से लिये हुए नियम का उसी अवस्था में त्याग रहता है। अतः कैसे लिया उसका संकेत..॥

त्याग चिन्ह कायम कर यहाँ (   ) नोट करलें जो जो हर एक वस्तु पर करना है।

इनमें प्रत्येक वर्ग के पीछे जो जगह खाली रक्खी गई है वहां इनके अलावा खाद्य-वस्तु का नाम लिख सकते हैं।

अपवाद (कारण विशेष) में जैसे औषधी आदि में सर्व वस्तु ग्राह्य है।

व्रत धारक अपना नाम नीचे कि लाइनों में उधृत करे।—

नाम..

मु०..............................जि०..